2.प्रेम अयनि श्री राधिका

लेखक - रसखान

जन्म → इनके जन्म के बारे में सही सूचना प्राप्त नही है लेकिन कहा जाता है कि दिल्ली के पठान राजवंश में इनका जन्म हुआ।

ग्रंथ → प्रेमवाटिका (1610 ई०), सुजान रसखान

→ दिल्ली से भागकर ब्रजभूमि चले गये।

→ ये कृष्ण भक्ति तथा वैष्णव धर्म के गहन संस्कार थे |

→ ये आलौकिक प्रेम की ओर आकृष्ट होकर भक्त हो गए |

→ ये स्वामी विठलनाथ से परिष्टिमार्ग की दीक्षा ली |

→ सुजान रसखान ग्रंथ में कृष्ण की भक्ति संबंधी रचना है |

→ रसखान ने कृष्ण का लीला गान पदों में नही सवैया में किया है।

→ रसखान सेवैया द्वन्द्व में सिद्ध थे।

→ रसखान का भाषा ब्रजभाषा था |

→ इस कविता में रसखान कृष्ण पर अपना सर्वस्व जीवन न्योछावर करना चाहते है |

* हिन्दी अर्थ व्यख्या :-

प्रेम अयनि श्री राधिका

दोहा → प्रेम अयनि श्री राधिका प्रेम बरन नंदनंद।

प्रेमवाटिका के दोऊ, माली - मालिन द्वन्द्व

अर्थ → प्रस्तुत पंक्ति हमारे गोधूलि पाखंड के प्रेम अयनि श्री राधिका से लिया गया है, जो रसखान द्वारा उद्धित है | कविता के माध्यम से कवि कहते है कि राधा प्रेम की खाजाना है, तथा कृष्ण प्रेम का रूप हैं। ये दोनों संसार रूपी बारिका के माली तथा मालीन है | इनके दया दृष्टि से ही इस संसार के फलरूपी प्राणी जीवित है |

दोहा :- मोहन छबि रसखानि लाखि अब दृग अपने नाहिं।
अँचे आवत धनुस से छूटे सर से जाहिं।

अर्थ :- जब से रसखान को कृष्ण जी के दर्शन हुए है। "तब से उनकी दृष्टि भी अपनी नहिं है | अर्थात उनकी आँखे हमेशा कृष्ण की दर्शन चाहते है | जैसे धनुष से बान घुटकर चला जाता है |

दोहा - भो मन मानिक लै गयो चितचोड़ नंद।

अब बैमन मै का करूँ परी फेट के कंद।

अर्थ :- कवि कहते हैं कि मेरे मन को कृष्ण चुड़ाकर ले गये है | मैं तो अब समस्या से पड़ गया हूँ। कि बिना मन के मैं क्या करूँ |

दोहा :- प्रीतम नन्दकिशोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ ।

मन पावन चितचोर पलक ओट नहि कर सकौ |

अर्थ : → कवि अपनी विवशता प्रकट कर रहे है कि जिस "दिन से कृष्ण जी के दर्शन हुए है, तब से वे कवि के मन को चुरा लिये है, अब कवि हमेशा कृष्ण जी के ही रूप का दर्शन चाहते हैं |

करील के कुंजन ऊपर वारौ

सवैया - या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूँ पुर की तजि डारौं |

आठहुँ सिद्धि नवोनिद्धी को सुख नंद की गाई चराइ बिसारौ |

अर्थ → उपयुक्त सेवैया के माध्यम से कवि कहते है, यदि मुझे कृष्ण जी की छोटी लाठी तथा कंबल मिल जाए। तो मैं संसार की सभी सुखों को छोड़ दूंगा। और यदि मुझे नंद के गाय चराने का अवसर मिल जाए तो मैं आठों सिद्धि और नवोनिद्धी को त्याग दूंगा।

सवैया - रसखानि कबौ इन आँखिन सौं ब्रज के बनलाग तडाग निहारौ

कोटिक रौ कल धौत के धाम करील के कुंजर ऊपर व ग्यै

अर्थ :- कवि का कहना है कि जब से उसने ब्रज के वनों, बगीचा तथा तलाब को देखा है, तब से उन्हें वहाँ के काटेदार पौधे और तिते फलों के पौधे के समझ संसार के कड़ोरो 'सुनहरे महल और इन्द्रधाम भी तुच्छ नजर आते है |

- Objective -

1. कवि करील गुंजन किस पर अर्पन करना चाहते है ?

Ans - कृष्ण पर

2. कवि ने माली-मालिन किसे कहाँ है ?

Ans - राधा - कृष्ण को

3. रसखान के रचनाकाल के समय किसका राज्यकाल था ?

Ans - जहाँगीर का

4. रसखान ने कृष्ण लीला का गान किसमें किया है ?

Ans - सवैयों में

5. रसखान किस पर सैकड़ो इन्द्रलोक को न्योछावर करने की करते है ?

Ans - करील के कुंजने पर

6. रसखान किस विषय में सिद्ध था ?

Ans - सवैया छन्द

7. कवि रसखान कृष्ण की भक्ति संबंधी रचना किस यंत्र पे की है।

Ans - प्रेमवारिका में सुजान रसयान में

8. कवि रसखान ने चितचोड़ किसे कहा है ?

Ans - कृष्ण को

9. कवि रसखान दिल्ली से कहाँ चले गये ?

Ans – ब्रजभूमि

10. कवि रसखान किस भाषा के कवि थे ?

Ans - ब्रजभाषा

11. सम्प्रदायमुक्त कृष्ण भक्ति के कवि है ?

Ans - रसखान

12. किस कवि को गोस्वामी विठ्ठलनाथ ने पूसरिमार्ग की शिक्षा दी ?

Ans – रसखान

Subjective - कविता के साथ

1. कवि ने माली - मालिन किन्हें और क्यों कहा है ?

Ans - कवि रसखान कृष्ण और रधिका को माली - मालिन कहा है क्योंकि कवि के अनुसार जिस प्रकार वाटिका में माली - मालीन का कार्य करके पुष्प की देखभाल करता है, ठीक उसी कार्य को प्रेम वाटिका में कृष्ण – राधिका करते है |

2. द्वितीय दोहे का काव्य-सैंदर्य स्पष्ट करें।

Ans - द्वितीय दोहे के अनुसार कवि कहते है, जब उसने कृष्ण जी की दर्शन किये है | तब से उनकी दृष्टी अपने नही है, उनकी आँखे हमेशा कृष्ण जी की ही दर्शन चाहते है तथा उनका नयन भी कृष्ण दर्शन ही चाहते है |

3. कृष्ण जी को कवि ने चितचोर क्यों कहा है ?

Ans – कवि रसखान ने कृष्ण को चितचोर कहा है, क्योंकि कवि के अनुसार नंद उनके चित को चुरा लिये है।

4. सवैये में कवि की कैसी आकांक्षा प्रकट होती है असपस्ट करें | स्पष्ट करें |

Ans – सेवैये में कवि की अगले जन्म की अकांक्षा प्रकट होती है। 'कवि कहते है, कि मुझे तीनों लोक के सुख कृष्ण के छोटी लाठी और कंबल पर समझ आते है |